रंगमंच के माध्यम से गांधीवादी मूल्यों की खोज

ऊषा प्रीसिला एम्ब्रोस

गांधीजी की 150वीं जयन्ती के समारोह के दौरान हमने स्कूली बच्चों और शिक्षकों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने और उन्हें यह अनुभव देने की योजना बनाई कि गांधीजी का जीवन कैसा था और किन विचारों और मूल्यों में उनका गहरा यक़ीन था। हमने इसे दर्शकों के लिए मंच पर अभिनीत करने का फ़ैसला किया। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के फील्ड सदस्यों और टीचर्स थिएटर ग्रुप, कोप्पल के सदस्यों के साथ नन्दीश कुमार ने इस कार्यक्रम की कल्पना की।

गांधीजी के जीवन से सीख लेने में बच्चों की रुचि जगाने हेतु हमने सबसे पहले स्कूलों में एक एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। चार छोटे नाटकों में अभिनय करने के लिए बच्चों की चयन प्रक्रिया भी अनूठी थी। सभी उच्च प्राथमिक स्कूल के बच्चों को इकट्ठा होने के लिए कहा गया और हमने पहले उन्हें कुछ ऐसे सरल, मनोरंजक खेलों में लगाया जिसमें सभी बच्चे भाग ले सकें। इसके बाद बच्चों की राय लेकर नाट्य समूह बनाए गए।

बच्चे भले ही कक्षा में जाने से चूक जाते, लेकिन वे नाटक की रिर्हसल में आने से कभी नहीं चूकते। वे गांधीजी की भूमिका निभाने के लिए बड़े ही जोश के साथ एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे थे। यहाँ तक कि गांधीजी की भूमिका पाने के लिए वे अपना सिर मुँडवाने के लिए भी तैयार थे। अभ्यास करने के लिए वे सुबह स्कूल की घण्टी बजने के पहले ही टीचर लर्निंग सेंटर (टीएलसी) में भीड़ लगा देते और शाम होने के बाद भी सेंटर से जाने के लिए राज़ी नहीं होते थे। शिक्षकों और हम सभी ने महसूस किया कि गांधी नाट्य महोत्सव के लिए नाट्य अभ्यास सत्र सभी बच्चों को बड़े मज़े से, मिलकर काम करने और सीखने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान कर सकते हैं। हम उनके साथ घुल-मिल गए और स्नेह के साथ बातचीत की जिससे वे स्वाभाविक रूप से ख़ुद को अभिव्यक्त करने में सक्षम हुए। हमने महसूस किया कि रंगमंच बच्चों के स्वेच्छा से, ख़ुशी-ख़ुशी गहन विषयों को सरलतम तरीक़े से सीखने और उनमें संवेदनशीलता पैदा करने का एक उत्कृष्ट माध्यम है। इस प्रकार सीखने की प्रक्रिया केवल बच्चों तक ही सीमित नहीं थी; हम सभी जो उनके साथ काम कर रहे थे, उन्होंने भी उनसे नई चीज़ें सीखीं।

हमने बच्चों के साथ नाटकों के विषय और सन्दर्भ पर चर्चा की। गांधीजी के बारे में उनके पास जो जानकारी थी, उन्होंने उसे साझा किया। जब हमने उन्हें आज की दुनिया में गांधीजी की प्रासंगिकता और उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में बताया तो बच्चे मंत्रमुग्ध हो गए। वे यह सुनकर हैरान रह गए कि दक्षिण अफ़्रीका में एक नाई ने उनका अपमान किया और कहा कि वह एक 'काले आदमी' के बाल नहीं काटेगा। इन घटनाओं को सुनते हुए बच्चे नाटकों के संवादों को अपनी रोज़मर्रा की भाषा में गढ़ते गए।

हमने इस बारे में बात की कि कैसे बैरिस्टर होते हुए भी गांधीजी कपड़ा बनाने के लिए सूत कातते, सादा खाना खाते, बदन ढँकने के लिए कपड़े के सिर्फ़ दो टुकड़े इस्तेमाल करते और अपना सारा काम ख़ुद ही करते थे। वह हमेशा देश में बनी और उत्पादित चीज़ों का ही इस्तेमाल करते और उनके पास बहुत कम सम्पत्ति थी। उनका सन्देश था कि सभी से प्रेम करें, दूसरों की चिन्ता करें, सबको माफ़ करें और कभी किसी को दुख न पहुँचाएँ। हमारे पर्यावरण और स्वच्छता के प्रति उनकी चिन्ता और इस तरह के कई अन्य विवरण बच्चों द्वारा अपने लघु नाटकों के माध्यम से अभिनय कर दिखाए गए।

बच्चों पर प्रभाव

मलाया, सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय (जीएचपीएस), गैबर का एक नन्हा बालक है। उसने एक नाटक में अभिनय किया था। उस समय तक उसे विज्ञान परियोजनाओं में कोई दिलचस्पी नहीं थी। नाटक में भाग लेने से उसका आत्म-सम्मान बढ़ा और उसने अपनी कक्षा की परियोजनाओं को पूरा करना और उन्हें अपने शिक्षकों को दिखाना शुरू कर दिया। उसने कार्यों को समझने पर भी अधिक ध्यान देना शुरू कर दिया और उन्हें पूरा करने का प्रयास करने लगा। इसी तरह एकदम शान्त रहने वाली रत्ना भी अब विश्वास के साथ कक्षा में अपनी बात रखने लगी है। चुपचाप रहने वाले सोहेल सहित कई बच्चों ने नाटकों में अभिनय के परिणामस्वरूप आत्मविश्वास के साथ अपनी राय व्यक्त करना शुरू कर दिया, ख़ासकर तब से, जब से उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दृश्यों में भाग लिया।

आठवीं कक्षा का छात्र फैज़ल सीखने में कठिनाई के कारण कक्षा में पिछड़ गया था और सभी गतिविधियों से दूर रहना

पसन्द करता था। वह काफ़ी झिझक के बाद नाटक में भाग लेने के लिए तैयार हुआ था। इसके बाद उसने स्कूल के एक नाटक में भी काफ़ी अच्छा प्रदर्शन किया और दूसरे बच्चों ने ख़ुशी-ख़ुशी उसे स्कूल की नाटक मण्डली में शामिल कर लिया।

सरकारी बालकरा बालमन्दिर (महिला एवं बाल विकास विभाग के अधीन बालक गृह) से जीएचपीएस, सरदारगल्ली आने वाले बच्चे नाटक में सफ़ाईकर्मी की भूमिका निभा रहे बच्चे का मज़ाक उड़ाते। इससे वह लड़का निराश हो गया और उसने भूमिका निभाने से इन्कार कर दिया। लेकिन जैसे-जैसे रिहर्सल आगे बढ़ी और उसने इस भूमिका को बेहतर ढंग से समझा, उसे इस काम का महत्त्व समझ आया और उसने अपनी भूमिका को बख़ूबी निभाया।

जीएचपीएस, सरदारगल्ली के दो बच्चे गांधीजी की भूमिका के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे। निर्देशक ने कहा, "जिसे गांधीजी का रोल चाहिए वह अपना सिर मुँडवा ले।" दोनों इसके लिए तैयार थे। इस बीच उनमें से एक लड़का कुछ दिनों तक अनुपस्थित रहा। प्रदर्शन के दिन दोनों लड़के सिर मुँडवाकर पहुँच गए। फिर एक लड़के ने मना कर दिया और दूसरे को यह भूमिका निभाने का मौक़ा दे दिया। लेकिन निर्देशक ने यह सुनिश्चित किया कि दोनों को अलग-अलग दृश्यों में मंच पर गांधीजी की भूमिका निभाने का मौक़ा मिले। इन दोनों के साथ-साथ सफ़ाईकर्मी की भूमिका निभाने वाले लड़के को भी गांधीजी की भूमिका निभाने का अवसर मिला। एक ही नाटक में तीन अलग-अलग लड़कों ने गांधीजी की भूमिका निभाई।

शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ

शिक्षकों ने नाटकों की तैयारी की पूरी प्रक्रिया में बेहद रुचि और समर्पण के साथ सहयोग किया। कोप्पल कस्बे के सरदारगल्ली के जीएचपीएस में पढ़ने वाले सरकारी बालमन्दिर के लड़के पूरी आज़ादी के साथ अभिनय की पूरी प्रक्रिया में शामिल थे। बालमन्दिर के वार्डन आमतौर पर बच्चों को बिना पूर्व अनुमति के कहीं भी जाने नहीं देते थे, पर हमने जितनी बार उनसे अनुरोध किया, उन्होंने उतनी बार बच्चों को टीएलसी जाने की अनुमति दी। वे रिहर्सल के लिए बच्चों के साथ जाते और अपने बच्चों को अभिनय में तल्लीन होते देख बड़े ख़ुश होते। वे प्रदर्शन के दिन बालमन्दिर के सभी बच्चों को लेकर आए थे।

दयानन्द सागर, जो एक स्कूल में विज्ञान-शिक्षक हैं और एक नाटककार भी हैं, ने ख़ुशी-ख़ुशी साझा किया कि उनके स्कूल की सातवीं कक्षा की लड़कियाँ पहले किसी भी आयोजन के लिए मंच पर जाने में हिचकिचाती थीं, नाटक में भाग लेने के बाद ऐसा करने को लेकर उनकी घबराहट कम हुई है।

जीएचपीएस, निलोगीपुर के शिक्षक मुत्तुराज ने बताया कि नाटक में स्वच्छता के दृश्यों में अभिनय करने वाले बच्चे अपने आस-पास के वातावरण को साफ़ रखने को लेकर उत्सुक हैं। इसी स्कूल में बच्चों ने राष्ट्रीय अवकाश को सार्थक तरीक़े से मनाने के बारे में एक छोटा-सा व्यंग्य नाटक (skit) किया। इससे शिक्षकों को बच्चों को प्रत्येक राष्ट्रीय अवकाश और प्रमुख लोगों की जयन्ती की पृष्ठभूमि समझाने के महत्त्व का एहसास हुआ। नतीजतन, उन्होंने विशेष दिनों पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए राष्ट्रीय नेताओं के चित्र लगाने की प्रथा को छोड़ दिया और इसकी जगह इन दिनों के महत्त्व के बारे में बच्चों के साथ बातचीत करना शुरू कर दिया।

जीएचपीएस, हनुमनाहल्ली के प्रणेश पूजार याद करते हैं कि कैसे उनके स्कूल के बच्चे स्कूल परिसर में पौधों को पानी देना और सफ़ाई करना आदि जैसे काम करने के लिए स्वेच्छा से आगे आने लगे। बच्चे अक्सर उसका हवाला देते जो उन्होंने गांधी नाटक में किया और उत्साह के साथ गांधीजी के सबक़ दोहराते। उन्होंने बताया कि कैसे बच्चे कई दिनों तक नाटक के संवादों को ख़ुशी से दोहराते हुए स्कूल में घूमते रहते थे। बच्चों में इतना सकारात्मक बदलाव देखकर उन्होंने अपने विद्यार्थियों द्वारा एक और नाट्य प्रदर्शन शुरू करने की इच्छा भी जताई।

कुछ और सीख

हर रिहर्सल में हालाँकि दृश्य एक ही होते, लेकिन बच्चों के संवाद बदल जाते थे क्योंकि उन्होंने संवादों को रटा नहीं था। फिर भी बच्चों ने सन्दर्भ से अलग बात नहीं की। गांधीजी के जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को दर्शाने वाले विभिन्न दृश्यों के बारे में बच्चों की राय लेकर दृश्यों का परिचय कराते हुए पूरे नाटक को लिखा गया था। गांधीजी के जीवन के विभिन्न चरणों जैसे उनके बचपन, युवावस्था, शिक्षा, उनके पेशे और दक्षिण अफ़्रीका में संघर्ष, सत्याग्रह और जिन मूल्यों पर गांधीजी विश्वास रखते और जिनके लिए वह जीते थे उन्हें दृश्य रूप में बताने के बारे में व्यापक चर्चाएँ हुईं। बच्चे गांधीजी के व्यक्तित्व में अशिष्टतारहित सूक्ष्म दृढ़ता को समझ गए थे।

जिन बच्चों ने गांधीजी की तस्वीरें केवल स्कूल में, पाठ्यपुस्तकों और मुद्रा नोटों में देखी थीं और राष्ट्रीय समारोहों के दौरान दिए गए भाषणों में सुना था कि उन्होंने 'हमारे देश को आज़ादी दिलाई', वे नाटक प्रदर्शन के माध्यम से गांधीजी के जीवन और कार्य के वास्तविक सार का अनुभव कर पाए। साथ ही वह दर्शकों को भी यह बात बता पाए।

अगर कोई उनसे पूछता कि वे इन नाटकों का प्रदर्शन क्यों कर रहे हैं, तो बच्चे जवाब देते कि गांधीजी ने अपने जीवन के माध्यम से यह दर्शाया है कि उनके आदर्शों के साथ जीवन जीना सम्भव है और सभी को इन आदर्शों को समझना चाहिए और इनका अनुकरण करना चाहिए। बच्चे यह समझने में

सफल रहे कि शौचालय धोकर, ख़ुद के बाल काटकर गांधीजी ने दिखा दिया कि कोई भी काम हीन या श्रेष्ठ नहीं होता। और यह कि अहिंसा के माध्यम से भी हमारे अधिकारों की लड़ाई कम प्रभावी नहीं होती है।

कुछ प्रश्न जिन पर विद्यार्थियों और शिक्षकों ने चर्चा की, इस प्रकार हैं : गांधीजी ने अपने जीवन के माध्यम से क्या सन्देश दिए? इनमें से कौन-सा सन्देश उनका सबसे पसन्दीदा था? क्या बदलाव लाना मुश्किल है? यदि हाँ, तो क्यों?

लड़कों को घर के कामों से जोड़ने पर होने वाली चर्चा थोड़ी नई थी और इससे वह थोड़े असहज और हैरान हुए। यह देखना विशेष रूप से आकर्षक था कि बच्चे गांधीजी के सन्देशों और मूल्यों को सही ढंग से पहचानने में सक्षम थे। इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों और शिक्षकों ने अफ़सोस के साथ स्वीकार किया कि अभी भी हमारे गाँवों में जाति और लिंग के नाम पर भेदभाव मौजूद है और उनका मानना था कि इसे मिटाने के लिए सभी को इस दिशा में प्रयास करना चाहिए।

आभार

रंगमंच कार्यकर्ता और मंगलूरु की लेखिका वाणी पेरिओडी ने इस प्रक्रिया में हमारी मदद की। उन्होंने नाटकों के लिए संसाधन सामग्री तैयार की और उपलब्ध भी कराई। उन्होंने चारों स्कूलों का दौरा किया और बच्चों से बातचीत की। रंगमंच कार्यकर्ता और कोप्पल के विस्तार थिएटर स्कूल के प्रधानाचार्य लक्ष्मण पिरागर ने इन नाटकों को तैयार करने में हमारी मदद की।

**बच्चों की पहचान छिपाने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।*



ऊषा प्रीसिला एम्ब्रोस अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ एक दशक से अधिक समय से काम कर रही हैं। वह ज़िला टीम, कोप्पल का नेतृत्व करती हैं। उन्होंने राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। उन्हें वंचित समुदायों के साथ काम करने और महिलाओं को सशक्त बनाने का समृद्ध अनुभव है। उन्हें कलाकृतियाँ बनाने में आनन्द आता है। वे साहित्य, संगीत और घूमने में भी दिलचस्पी रखती हैं। उनसे usha.ambrose@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी